

॥ श्रीमद्भगवद्गीता विवेचन सारांश ॥

अध्याय 12: भक्तियोग

2/2 (श्लोक 12-20), शनिवार, 28 सितंबर 2024

विवेचक: गीता प्रवीण ज्योति जी शुक्ला

यूट्यूब लिंक: <https://youtu.be/cOiWMxc2VKM>

भक्तों के लक्षण

इन्दिरा एकादशी के शुभ दिन, वैदिक परम्परा के अनुसार दीप प्रज्वलन, देश भक्ति गीत, हनुमान चालीसा पाठ, गुरु वन्दना एवं आरम्भिक प्रार्थना के साथ सत्र का प्रारम्भ हुआ। पूर्वार्द्ध में हमने दो प्रकार के भक्तों के लक्षण देखे- सगुण और निर्गुण। आज के सत्र में बहुत ही आनन्द आने वाला है। आज हमें सभी बातें बड़े ध्यानपूर्वक सुननी है। हम ध्यान से सुनेंगे तो ही समझ पाएँगे और तभी हम स्वयं को अङ्क दे पाएँगे। आज उनतालीस पेपर ओपन होने वाले हैं। सत्र को रोचक बनाने के लिए, बच्चों में उत्साहवर्धन करने के लिए, संवाद परक विवेचन किया गया।

प्रश्न- पहले सत्र में कितने प्रकार के भक्तों, उपासकों, साधकों की बात हुई थी?

उत्तर- दो प्रकार के भक्त- सगुण भक्त और निर्गुण भक्त की बात हुई थी। साठ प्रतिशत बच्चों ने सही उत्तर दिया।



ध्यानात्कर्मफलत्यागः(स),त्यागाच्छान्तिरनन्तरम्॥12.12॥

अभ्यास से शास्त्रज्ञान श्रेष्ठ है, शास्त्रज्ञान से ध्यान श्रेष्ठ है (और) ध्यान से (भी) सब कर्मों के फल की इच्छा का त्याग (श्रेष्ठ है)। क्योंकि त्याग से तत्काल ही परम शान्ति प्राप्त हो जाती है।

विवेचन- यहाँ श्रीभगवान् कहते हैं कि अभ्यास से ज्ञान श्रेष्ठ है, ज्ञान से ध्यान श्रेष्ठ है तथा ध्यान से सभी कर्मों के फल का त्याग श्रेष्ठ है। इसे थोड़ा सरलता से समझते हैं। अभ्यास अर्थात् जो हम बार-बार करते हैं। कोई भी नया कार्य जब हम सीखते हैं, उसका बार-बार अभ्यास (practice) करते हैं।

गणित हो, विज्ञान हो या कोई भाषा (language) हम सीखते हैं। बार-बार अभ्यास कर रहे हैं पर समझ में नहीं आ रहा है कि यह क्या है? उसका व्यवहारिक रूप में उपयोग (practical implementation) क्या है, तो उसका कोई लाभ नहीं है।

उदाहरण के लिए हम क्षेत्रफल (Area) का सूत्र पढ़ते हैं, यदि हमें पता ही नहीं है कि क्षेत्रफल का अर्थ क्या है और इसे कहाँ उपयोग में लाते हैं, तो उसका कोई लाभ नहीं होगा। गहरा ज्ञान (Deep knowledge) नहीं होगा तो बार-बार रटने से भी कोई लाभ नहीं होगा। इसलिये कहा गया है अभ्यास से ज्ञान श्रेष्ठ है।

Knowledge is better than practice.

ज्ञान से ध्यान श्रेष्ठ है। श्रीभगवान् का ध्यान करते समय उनका स्वरूप हमारे ध्यान में आना चाहिए। वे कैसे दिखते हैं? वे कितने सुन्दर हैं? उनका ही चिन्तन करना, उसे ध्यान कहते हैं। ध्यान से भी श्रेष्ठ है, कर्मों के फल का त्याग। जो भी कार्य हम करते हैं, हमने पढ़ाई की, परीक्षा दी और उसका जो परिणाम (फल) आया। उस परिणाम को, जो भी आता है, उसको त्याग देना, उसमें आसक्ति नहीं होना कि यही परिणाम आना चाहिए।

अगले श्लोक पर जाने से पहले हम पता करते हैं कि आप ध्यान से सुन रहे हैं या नहीं।

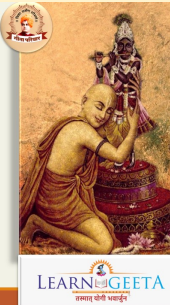
प्रश्न-आज कितने पेपर खुलने (open) वाले हैं?

उत्तर- आज उनतालीस (39) पेपर खुलने (open) वाले हैं।

श्रीभगवान् के प्रिय भक्तों में ये उनतालीस (39) लक्षण या गुण होने चाहिए।

श्रीमद्भगवद्गीता के 12वें अध्याय में श्रीभगवान् द्वारा वर्णित भक्त के 39 लक्षण			
1 अवेष्टा	: द्रेषभय विदित	21 दृष्टः	: सुखसमाख्य
2 सर्वभूतानाम् कर्म	: स्वकाय विदित	22 उपदमीनः	: पञ्चजन विदित
3 सर्वभूतानाम् कर्मणः	: इन्द्रिय	23 स्वकामः	: किञ्चिन्नापि प्रीतिकेचिन्नापि स्वर्गिणः स्वर्गं हृदये
4 विदितः	: मे श्रीभगवान् से विदित	24 सर्वभूतानाम् प्रीतिः	: सर्वे उपकर्मों में अद्वेष श्री भगवान् का स्वरूप
5 विद्वद्भारः	: अक्षयक विदित	25 न द्वेषति	: अद्वेष दर्शित न द्वेष
6 सम्युक्तदृष्टः	: सुखदुःख की स्थिति में सम	26 न द्वेषति	: द्वेष न करता
7 क्षमि	: क्षमणीयता	27 न मोक्षति	: मोक्ष न करता
8 समस्त भण्डः	: विद्वान् समष्टु	28 न कण्टही	: दुःख न जानता
9 स्वामनः	: स्वयं पर विद्वान्	29 सुख-सौमिणी	: सुख कर्मों में सम-द्वेष का स्वरूप
10 हृदिभक्तः	: हृद-कीर्तन	30 अनुभूत-पीडयन्ती	: अनुभूत कर्मों में सम-द्वेष का स्वरूप
11 अविद्विषति	: मन का समर्थन	31 शत्रुः शत्रोश्च मित्रे च	: शत्रु और मित्र में समभाव
12 अविद्विषति	: बुद्धि का समर्थन	32 शत्रुः शत्रोश्च मित्रे च	: मन और अमान में समभाव
13 समस्त लोकः न चिन्तते	: किञ्चिन्नापि चिन्तित न चिन्तयति	33 श्रीभगवतोः शयः	: सर्व-गुणों (अच्छ-बुरा) (प्रतिद्वेष) में चिन्तित
14 न चिन्तयति न चिन्तयति	: किञ्चिन्नापि चिन्तित न चिन्तयति	34 शत्रुदुःखोः शयः	: सुख दुःख में चिन्तित
15 इर्वै सुखः	: इर्वै विदित	35 स्वर्ग-प्रीतिः	: स्वर्ग में अवस्थित-विदित
16 अमर्षे सुखः	: इर्वै विदित	36 सुख-प्रीतिः	: प्रिया-सुख में समभाव
17 भवे सुखः	: भवे विदित	37 शोभी	: मनमोहा
18 शत्रुर्न सुखः	: शत्रु-विदित	38 शत्रुदुःखोः शयः	: श्री भगवान् से उसके कण्टु
19 अमर्षः	: अमर्ष-विदित	39 अविद्विषति	: स्वयं में अवस्थित का स्वरूप
20 मुक्ति	: मुक्ति-विदित		

जो उपरोक्त लक्षणों में स्थिरमति (स्थायीभाव) है वह भक्त भगवान् को अत्यंत प्रिय है।



अद्वेषा सर्वभूतानां(म), मैत्रः(ख) करुण एव च निर्ममो निरहङ्कारः(स), समदुःखसुखः क्षमी॥13॥

सब प्राणियों में द्वेषभाव से रहित और मित्र भाव वाला (तथा) दयालु भी (और) ममता रहित, अहंकार रहित, सुख दुःख की प्राप्ति में सम, क्षमाशील, निरन्तर सन्तुष्ट, योगी, शरीर को वश में किये हुए, दृढ़ निश्चयवाला, मुझ में अर्पित मन बुद्धि वाला जो मेरा भक्त है, वह मुझे प्रिय है। (12.13-12.14)

विवेचन-

अद्वेषा - अर्थात् द्वेष न करना। किसी के लिए भी मन में बुरा भाव नहीं रखना। किसी से भी घृणा नहीं करना। सभी से मित्रता का भाव रखना। सभी से मित्रता रखनी है, शत्रुता नहीं। आप स्वयं को दस में से अङ्क (नम्बर) दीजिए। कुछ लोग ऐसे होंगे, जो हमें बहुत प्रिय होंगे और कुछ ऐसे होंगे, जो हमें अप्रिय होंगे। अगर हम किसी से घृणा करते हैं तो **अद्वेषा** का गुण हममें नहीं है।

सर्वभूतानां - सभी से मित्रता रखना। सभी के लिए मन में समान भाव रखना। किसी ने हमारे साथ बुरा बर्ताव किया तो वह हमारा शत्रु बन गया, ऐसा नहीं होना चाहिए। जैसे स्कूल में हम समूह (ग्रुप) बना लेते हैं। एक समूह के लोग दूसरे समूह (ग्रुप) के बच्चों के साथ झगड़ा करते हैं, दोस्ती नहीं रखते, बात नहीं करते पर अच्छे बच्चे, जो गीता पढ़ते हैं वे ऐसा नहीं करते। यदि हमें श्रीभगवान् के प्रिय भक्त बनना है तो हमें सबसे मित्रता रखनी है।

करुण - हम कितने दयालु हैं? कोई जानवर जा रहा है। गाय, कुत्ता उसे कुछ चीज फेंक कर मार दिया, ऐसा नहीं करना चाहिए। बड़े बच्चे छोटे बच्चों को तङ्ग करते हैं, ऐसा नहीं करना चाहिए। जैसे मच्छर आ जाते हैं, वे भी जीव हैं पर हम उन्हें हाथ से मार देते हैं, तो हमें ऐसा नहीं करना चाहिए। आप स्वयं को अङ्क (नम्बर) दीजिए कि आपमें कितनी दयालुता है।



निर्मम - अर्थात् मैं की भावना से रहित। यह मेरा, वह तेरा, तेरा-मेरा करते हैं। स्वार्थी हो जाते हैं। हमारी वस्तुएँ, हमारे भाई-बहन उपयोग में ला सकते हैं। यह मेरा बैग है। यह मेरा पेन है। यह मैं नहीं दूँगी/दूँगा ऐसा नहीं करना चाहिए। हमें बहुत स्वार्थी नहीं होना चाहिए। अब इसमें आपको कितने अङ्क मिले।

अब आता है पाँचवाँ लक्षण - **निरहङ्कार** अर्थात् अहङ्कार रहित। हम किसी प्रतिस्पर्धा में प्रथम आ गए। हमें बहुत घमण्ड होने लगता है कि हम प्रथम आए। अपनी उपलब्धि पर सन्तोष होना, यह अच्छी बात है, लेकिन उस पर अहङ्कार करना, यह अच्छी बात नहीं है।

सम दुःख-सुखः - सुख-दुःख में समान रहना। हमें बहुत अधिक प्रसन्न भी नहीं होना है। जब हमारे मन का न हो तो हमें बहुत अधिक दुःखी भी नहीं होना है। यह हमारा छठे नम्बर का पेपर था।

क्षमा - अर्थात् क्षमा कर देना। इसमें यह ध्यान रखने की बात है कि हम कह तो देते हैं क्षमा किया, पर भूल नहीं पाते हैं कि उसने हमारे साथ बुरा किया था। **Forgive and forget**. उसने हमारे साथ बुरा किया है, यह बात हमें भूल जानी है। जब हम दूसरों को क्षमा कर देते हैं, तो हम श्रीभगवान् के प्रिय भक्तों की श्रेणी में आ जाते हैं।

12.14

**सन्तुष्टः(स) सततं(यँ) योगी, यतात्मा दृढनिश्चयः।
मय्यर्पितमनोबुद्धिः(र), यो मद्भक्तः(स) स मे प्रियः॥12.14॥**

विवेचन- आठवाँ लक्षण है **सन्तुष्ट रहना** - तत्कालीन रूप से सन्तुष्ट नहीं, निरन्तर सन्तुष्ट रहना। हमारी कोई वस्तु पुरानी हो गई तो हमें नई चाहिए।

एक सच्ची घटना है देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद जी के जीवन की। उनके पास जो भी वस्तु होती थी, वे उसे उपयोग योग्य रहने तक काम में लेते थे। एक बार उनके जूते के तलवे पूरी तरह से घिस चुके थे तो भी वे उसका उपयोग कर रहे थे। उनके सहायक ने उनके लिए नए जूते लाने की अनुमति माँगी। उन्होंने मना कर दिया। जब तक उनके जूते पूरी तरह से टूट नहीं गए, वे उन्हीं का उपयोग करते रहे। उनकी यही विशेषता थी कि जो भी वस्तु उनके पास होती थी वे उसे उपयोग योग्य रहने तक काम में लेते थे। हमें भी ऐसा ही करना चाहिए। जब तक वस्तु उपयोग योग्य हो, नई वस्तु नहीं लेनी चाहिए।

यतात्मा - अर्थात् स्वयं पर नियन्त्रण। जैसे घर में एक टीवी होता है। सब भाई-बहन आपस में लड़ने लग जाते हैं। एक बोलेंगे मुझे डोरेमोन देखना है। दूसरा बोलेंगे मुझे तो बेनटेन ही देखना है। किसी दूसरे को दूसरा कार्टून देखना है। कोई बात हमें बुरी लगी तो, उस समय हमें स्वयं पर नियन्त्रण रखना है। बुरा नहीं मानना है, झगड़ना नहीं है। जैसे कक्षा में शिक्षक का प्रिय बनने के लिए हम गृहकार्य समय पर करते हैं। हमें मन लगाकर पढ़ाई करनी पड़ती है, अङ्क भी अच्छे लाने पड़ते हैं, समय से कार्य भी करना पड़ता है। जितना हम आत्म नियन्त्रण करते हैं उतने ही हम श्रीभगवान् के लिए प्रिय होते जाते हैं।



अब हम दसवाँ पेपर देखते हैं। वह है - **दृढ निश्चय**- हम जो सङ्कल्प लेते हैं, हमने जो सोचा, वह हमें पूरा करना चाहिए। एक कहावत है "**जमी टल्लत, जमा टल्लत मगर बन्दा नहीं टल्लत**"। टल्लत का अर्थ होता है टालना। हमें अपनी बात पर अटल रहना है। स्वामी जी ने कहा है, यदि हम टाल रहे हैं, कह रहे हैं कल से (tomorrow) करेंगे तो हमें अपने गाल पर दो चाँटे (two मारो) मारना है। tomorrow नहीं करना है।

मय्यर्पित - ईश्वर में मन और बुद्धि को समर्पित करना। परमपिता में अपना मन लगाना है। जो भी कार्य करें, श्रीभगवान् को समर्पित करते हुए करें। उनका स्मरण करते हुए करें। श्रीभगवान् कहते हैं, ऐसे भक्त मुझे बहुत प्रिय हैं।

12.15

**यस्मान्नोद्विजते लोको, लोकात्रोद्विजते च यः।
हर्षामर्षभयोद्वेगैः(र), मुक्तो यः(स) स च मे प्रियः॥15॥**

जिससे कोई भी प्राणी उद्विग्न (क्षुब्ध) नहीं होता और जो स्वयं भी किसी प्राणी से उद्विग्न नहीं होता तथा जो हर्ष, अमर्ष (ईर्ष्या), भय

और उद्वेग (हलचल) से रहित है, वह मुझे प्रिय है।

विवेचन-

त्रोद्विज - न किसी को व्याकुल (परेशान) करना और न किसी से परेशान होना। कोई हमें चिढ़ाए या हम किसी को चिढ़ाएँ यह अच्छी बात नहीं है।

अगला है **हर्ष** रहित - हर्ष अर्थात् प्रसन्न होना, खुश रहना। अब आप सोचेंगे अपनी उपलब्धि (achievement) पर प्रसन्न नहीं होना, खुश नहीं होना, ऐसा नहीं है। प्रसन्न होना है, खुश होना है, पर बहुत अधिक नहीं, सामान्य रहना है। अत्यधिक प्रसन्न नहीं होना है।

अमर्ष - किसी से भी ईर्ष्या नहीं करना है। कोई स्पर्धा में जीत गया, किसी की प्रशंसा हुई, तो उससे हमें ईर्ष्या नहीं करनी है। ये हमारे सोलह पेपर हो गए, अर्थात् भक्त के सोलह गुण।



यह सत्रहवें नम्बर का पेपर है - **भयरहित** होना। ऐसा नहीं है कि शेर आ जाए तो हम डरें नहीं। हमें बिना बात नहीं डरना चाहिए। हम चूहे से डरते हैं, कॉकरोच से डरते हैं, छिपकली से डर लगता है, हमें अँधेरे से डर लगता है। हम भयरहित कैसे हो सकते हैं? उदाहरण के लिए हम कल्पना (imagine) कर सकते हैं कि छिपकली ने टोपी पहनी है, काले रङ्ग की फ्रॉक पहनी है, उसके गुलाबी गाल हैं। ऐसी कल्पना करें, तो वह हमें सुन्दर दिखाई देने लगती है, हमारा डर दूर हो जाता है। कितनी सुन्दर छिपकली है। इसी तरह, कॉकरोच के बारे में सोचें कि कॉकरोच की कितनी बड़ी-बड़ी मूँछें हैं। उसने कितना सुन्दर काला चश्मा पहना है। ऐसा हम माने तो फिर हमें डर नहीं लगेगा।

उद्वेग रहित अर्थात् शीघ्र क्रोधित (aggressive) नहीं होना। छोटी-छोटी बात पर हम क्रोधित हो जाते हैं। aggressive हो जाते हैं। जिनमें ये गुण नहीं होते हैं, वे प्रिय भक्त नहीं बन पाते हैं नहीं

12.16

**अनपेक्षः(श) शुचिर्दक्ष, उदासीनो गतव्यथः।
सर्वारम्भपरित्यागी, यो मद्भक्तः(स) स मे प्रियः॥16॥**

जो अपेक्षा (आवश्यकता) से रहित, (बाहर-भीतर से) पवित्र, चतुर, उदासीन, व्यथा से रहित (और: सभी आरम्भों का अर्थात् नये-नये कर्मों के आरम्भ का सर्वथा त्यागी है, वह मेरा भक्त मुझे प्रिय है।

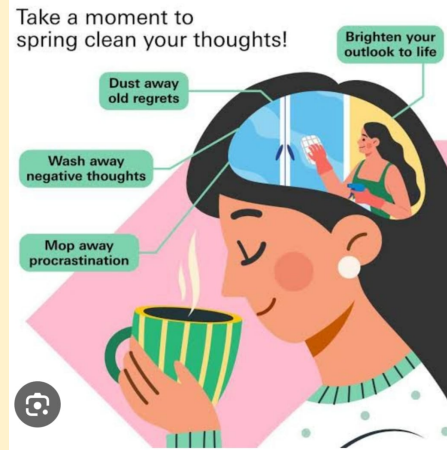
विवेचन-

अनपेक्ष - किसी से अपेक्षा न रखना। परीक्षा में नब्बे प्रतिशत (90%) आने चाहिए, अस्सी प्रतिशत (80%) आने चाहिए। अपेक्षा तो करें परन्तु उसमें बहुत अधिक आसक्त न हों। आज मेरे मित्र को मुझे फोन करना चाहिए था। फिर यदि उसने आपको फोन

नहीं किया तो आप दुःखी हो जाते हैं इसलिये हमें अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए।

अगला बीसवें नम्बर का पेपर है। वह है- **शुचि** - बाहर और अन्दर की शुद्धता। जैसे सड़क पर कचरा फेंक दिया। टॉफी खाकर रैपर फेड़ दिया, ऐसा नहीं करना चाहिए। ठीक तरह से कचरा पात्र (डस्टबिन) में डालना चाहिए। स्कूल से आए तो हाथ धोकर शुद्धता से भोजन करना चाहिए। साफ-सफाई रखनी चाहिए। प्रतिदिन स्नान करना चाहिए।

अन्दर की शुद्धता अर्थात् निश्चलता। हमारे मन में बुरे विचार तो नहीं आ रहे। हम किसी के लिए बुरा तो नहीं सोच रहे। मन की शुद्धता के लिए, जब हम श्रीभगवान् में ध्यान लगाते हैं तो हमारे मन की अपने आप सफाई हो जाती है।



दक्ष - अर्थात् हम कितनी कुशलता से कार्य करते हैं। कितने सावधान होकर हम अपना कार्य करते हैं। कुछ बच्चे बड़ी सुन्दरता से लिखते हैं, उनकी लिखाई बहुत सुन्दर होती है। वे बहुत सुन्दर अक्षर लिखते हैं। किसी की चित्रकला बहुत अच्छी होती है तो यह उनकी कुशलता होती है। यदि हमें किसी कार्य में दक्ष होना है तो बड़े ध्यान से, एकाग्रता से कार्य करना होगा। अभ्यास से कुशलता आती है।

उदासीन - अर्थात् तटस्थ (neutral)। कुछ अच्छा होता है तो प्रसन्नता से उछलना नहीं है, अधिक खुश नहीं होना है। यदि कुछ बुरा होता है तो उदास भी नहीं होना है, अधिक दुःखी नहीं होना है।

गतव्यथः - जिसके सारे दुःख समाप्त हो गए। मन में कोई भी दुःख न रहना। छोटी-छोटी बातों पर झगड़ा करना अच्छी बात नहीं है।

मान लो हमें रसगुल्ला खाना है तो स्वयं से पैसे लिए और जाकर खा लिया। हमारा मन हुआ और हम स्वयं जाकर ले आए और खा लिया, ऐसा नहीं करना है। इसका मतलब यह नहीं है कि जब तक हमें कोई काम करने का नहीं कहेगा हम नहीं करेंगे।



चलो अब देखते हैं कि आप लोग ध्यान से सुन भी रहे हैं या नहीं।

प्रश्न -बारहवें अध्याय का नाम क्या है?

उत्तर- बारहवें अध्याय का नाम भक्तियोग है।

(96%) छियानवे प्रतिशत, ज्यादातर बच्चों ने सही उत्तर दिया। जिन गुणों की अभी हमने चर्चा की है, यदि यह गुण हममें होते हैं, तो हम श्रीभगवान् के प्रिय भक्त बनते जाते हैं।

12.17

यो न हृष्यति न द्वेष्टि, न शोचति न काङ्क्षति। शुभाशुभपरित्यागी, भक्तिमान्यः(स्) स मे प्रियः॥17॥

जो न (कभी) हर्षित होता है, न द्वेष करता है, न शोक करता है, न कामना करता है (और) जो शुभ-अशुभ कर्मों से ऊँचा उठा हुआ (राग-द्वेष रहित) है, वह भक्तिमान् मनुष्य मुझे प्रिय है।

विवेचन- हमें बहुत अधिक खुश नहीं होना है। नाचने लगते हैं, गाना गाने लगते हैं ऐसा नहीं करना है।

द्वेष्टि - किसी से द्वेष नहीं रखना है।



शोचति - अधिक दुःखी नहीं होना है। हमारे अनुकूल कोई बात नहीं हुई तो हम बहुत दुःखी हो जाते हैं, ऐसा नहीं करना है। जैसे हमने सोचा था हमारे (90%) नब्बे प्रतिशत आएँगे और (50%) पचास प्रतिशत आए तो हम बहुत अधिक दुःखी हो जाते हैं। रोने लगते हैं, भोजन नहीं करते हैं। पूरा दिन खराब हो जाता है। यदि हम अत्यधिक दुःख करेंगे तो श्रीभगवान् के प्रिय भक्त नहीं बन पाएँगे।

न काङ्क्षति- अर्थात् जो कामना नहीं करता।

उनतीस और तीस **शुभ** और **अशुभ** कर्मों का त्याग। अशुभ कर्म जैसे झूठ बोलना, चोरी करना। ये सब तो हमें नहीं करना है। सोना बुरी बात नहीं है लेकिन कई-कई घण्टों तक सोना बुरी बात है। चॉकलेट खाना बुरी बात नहीं है परन्तु बहुत ज्यादा चॉकलेट खाना बुरी बात है।

12.18

समः(श) शत्रौ च मित्रे च, तथा मानापमानयोः। शीतोष्णसुखदुःखेषु, समः(स) सङ्गविवर्जितः॥18॥

(जो) शत्रु और मित्र में तथा मान-अपमान में सम है (और) शीत-उष्ण (शरीर की अनुकूलता-प्रतिकूलता) तथा सुख-दुःख (मन बुद्धि की अनुकूलता-प्रतिकूलता) में सम है एवं आसक्ति रहित है (और) जो निन्दा स्तुति को समान समझने वाला, मननशील, जिस किसी प्रकार से भी (शरीर का निर्वाह होने न होने में) संतुष्ट, रहने के स्थान तथा शरीर में ममता आसक्ति से रहित (और) स्थिर बुद्धिवाला है, (वह) भक्तिमान् मनुष्य मुझे प्रिय है। (12.18-12.19)

विवेचन- शत्रु और मित्र में सम भाव। जो हमें अप्रिय हैं हम उनसे बात भी नहीं करते, ऐसा नहीं करना चाहिए। यह अच्छी बात नहीं है। जैसे हमारा जन्मदिन आता है तो हम अपने मित्रों को बुलाना चाहते हैं, परन्तु उनमें कोई ऐसा होता है जिसे मम्मी बुलाना चाहती है और वह हमें पसन्द नहीं है तो हम अजीब सा मुँह बनाने लगते हैं।

मान - कभी हमारी बहुत प्रशंसा होती है, तो हम बहुत खुश हो जाते हैं। सबको बताते हैं।

अपमान - कभी ऐसा भी हो जाता है कि हम वह काम कर देते हैं जो हमें नहीं करना चाहिए, तो हमें सजा मिलती है। दोनों ही परिस्थितियों में, न हमें अधिक प्रसन्न होना है, और न अधिक दुःखी होना है।

शीत का अर्थ होता है ठण्ड और **उष्ण** का अर्थ होता है गर्मी। बहुत अधिक सर्दी और बहुत अधिक गर्मी को सम भाव से सहन करना चाहिए। हम जैसा सोचते हैं वैसा अनुभव करने लगते हैं।

सङ्गविवर्जितः - विषयों में आसक्ति न रखना। वस्तुओं से, क्रियाओं से हमें आसक्ति नहीं रखनी है। प्रतिदिन कार्टून ही देखना है। उसके बिना हम रह नहीं सकते हैं या प्रतिदिन मोबाइल का उपयोग करना ही है, ऐसा नहीं करना चाहिए।

12.19

तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी, सन्तुष्टो येन केनचित्। अनिकेतः(स) स्थिरमतिः(र), भक्तिमान्मे प्रियो नरः॥19॥

विवेचन-

तुल्यनिन्दास्तुतिः - कभी ऐसा होता है कि हमारे मित्र तो हमारी प्रशंसा करते हैं और जो हमारे मित्र नहीं होते वे कभी हमारी बुराई कर देते हैं, तो ऐसे समय में भी हमें समान भाव रखना है। निन्दा और प्रशंसा में एक ही भाव रखना है। यहाँ हमारे पैतीस गुण पूरे हुए।

मौनी - अर्थात् मननशील। अच्छी बातों का मन में मनन, चिन्तन करना। हमारे मन में अच्छे-अच्छे विचार आएँगे तो हमारा पूरा दिन अच्छा जाएगा।

सैंतीस नम्बर का पेपर है **सन्तुष्ट** - जो हमारे पास है या जो हमें मिला है उसमें सन्तुष्ट रहें।

अड़तीस नम्बर का पेपर है **अनिकेत** - निकेत का अर्थ है घर। कुछ बच्चे ऐसे होते हैं जो स्कूल नहीं जाना चाहते, घर को छोड़कर स्कूल जाते समय बहुत रोते हैं।

स्थिरमति - हमारी बुद्धि स्थिर होनी चाहिए। हमारी बुद्धि एकाग्रचित्त हो।

12.20

**ये तु धर्म्यामृतमिदं(यँ), यथोक्तं(म्) पर्युपासते।
श्रद्धधाना मत्परमा, भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः ॥12.20॥**

परन्तु जो (मुझ में) श्रद्धा रखने वाले (और) मेरे परायण हुए भक्त इस धर्ममय अमृत का जैसा कहा कहा है, (वैसा ही) भली भांति सेवन करते हैं, वे मुझे अत्यन्त प्रिय हैं।

विवेचन- अन्त में श्रीभगवान् कहते हैं, जो बिना संशय के इन सब लक्षणों का, गुणों का, पालन करते हैं वे मुझे अत्यधिक प्रिय होते हैं।

प्रिय भक्त के क्या लक्षण होते हैं। वह हमने इस अध्याय में देखा।

पुष्पिका - यह अध्याय की भूमिका या प्रस्तावना होती है। इसमें क्या लिखा है, क्यों लिखा है, कहाँ पर लिखा गया है, किसने लिखा? वह होता है। इसमें यह है कि श्रीकृष्ण भगवान् और अर्जुन के बीच संवाद हो रहा है। इस अध्याय का नाम है भक्तियोग। आज हमने यहाँ पर उनतालीस पेपर्स देखें और इन पेपर्स का स्कोर हुआ तीन सौ नब्बे।

श्रीभगवान् के नाम सङ्कीर्तन के साथ सत्र का समापन हुआ।

कौन बनेगा ज्ञानपति क्विज के परिणाम की घोषणा की गयी। Result announcement किया गया।
गहना दीदी प्रथम आई। उन्हें शत प्रतिशत (सौ में से सौ) (100/ 100) अङ्क प्राप्त हुए।

विचार मन्थन(प्रश्नोत्तर)-

प्रश्नकर्ता - उत्कर्ष भैया

प्रश्न -उपनिषत्सु का क्या अर्थ है?

उत्तर- इसका अर्थ है, उपनिषद में।

प्रश्नकर्ता - उत्सव भैया

प्रश्न - गीता परिवार का लोगो(Logo) स्वामी विवेकानन्द जी का क्यों है।

उत्तर- स्वामी विवेकानन्द जी में वे सब गुण हैं जो स्वामी जी हम सब में लाना चाहते हैं। भगवत् -भक्ति, भगवद्गीता, देश- प्रेम आदि।

॥श्रीकृष्णार्पणमस्तु॥

**ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासु उपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां(यँ) योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे भक्तियोगो नाम द्वादशोऽध्यायः ॥**

इस प्रकार ॐ तत् सत् - इन भगवन्नामों के उच्चारणपूर्वक ब्रह्मविद्या और योगशास्त्रमय श्रीमद्भगवद्गीतोपनिषदरूप

श्रीकृष्णार्जुनसंवाद में 'भक्तियोग' नामक बारहवाँ अध्याय पूर्ण हुआ।



हमें विश्वास है कि आपको विवेचन की रचना पढ़कर अच्छा लगा होगा। कृपया नीचे दिए लिंक का उपयोग करके हमें अपनी प्रतिक्रिया दीजिए।

<https://vivechan.learngeeta.com/feedback/>

विवेचन-सार आपने पढ़ा, धन्यवाद!

हम सब गीता सेवी, अनन्य भाव से प्रयास करते हैं कि विवेचन के अंश आप तक शुद्ध वर्तनी में पहुंचें। इसके बाद भी वर्तनी या भाषा संबंधी किन्हीं त्रुटियों के लिए हम क्षमा प्रार्थी हैं।

जय श्री कृष्ण !

संकलन: गीता परिवार - रचनात्मक लेखन विभाग

हर घर गीता, हर कर गीता!

Let's come together with the motto of Geeta Pariwar, and gift our Geeta Classes to all our Family, friends & acquaintances

<https://gift.learngeeta.com/>

गीता परिवार ने एक नवीन पहल की है। अब आप पूर्व में सञ्चालित हुए सभी विवेचनों कि यूट्यूब विडियो एवं पीडीऍफ़ को देख एवं पढ़ सकते हैं। कृपया नीचे दी गयी लिंक का उपयोग करें।

<https://vivechan.learngeeta.com/>

॥ गीता पढ़े, पढ़ायें, जीवन में लाये ॥

॥ॐ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥